न पद का मद, न ही मर्यादा का उल्लंघन, मातृवत् से किया कुशल प्रशासन

अपनी कुशाग्र बुद्धि, व्यक्तियों की परख, प्रेम, मर्यादा पालन, नियमित विद्यार्थी जीवन तथा अथक सेवा के कारण वे एक कुशल प्रशासिका भी थीं। इसलिए सन् 1951-52 से लेकर (जब से ईश्वरीय सेवा प्रारम्भ हुई) सन् 1961 तक वे कन्ट्रोलर अथवा प्रशासन-अभियन्ता एवं नियंत्रक नियुक्त थीं और जनवरी सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा के अव्यक्त होने के बाद पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ दीदी मनमोहिनी अतिरिक्त प्रशासिका के तौर पर सेवारत थीं। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात है कि 14 वर्षों तक दादी और दीदी दोनों ने मिलकर इस प्रकार प्रशासन कार्य किया कि कभी उनमें मन-मुटाव नहीं हुआ, न कभी उन्होंने एक-दूसरे की आलोचना की। वे कहा भी करतीं कि हम दोनों के शरीर अलग-अलग हैं परन्तु आत्मा एक है। उनके इस मंतव्य और घनिष्ठ स्नेह को देखकर लोग दंग रह जाते, इन दोनों के कुशल प्रशासन में, परमपिता परमात्मा शिव के प्रशिक्षण एवं संरक्षण में ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति की जिसके फलस्वरूप, सन् 1983 से पहले ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विश्वभर में लगभग 1150 सेवाकेन्द्र थे।

प्रशासनिक कुशलता

दीदी जी के जीवन में अनेक दिव्यगुण अपनी चरम उत्कर्ष पर थे। वे 72 वर्ष की आयु में भी आश्चर्यचकित कर देने वाली स्फूर्ति और चेतना के साथ काम करती थीं। मधुबन में देश के कोने-कोने से तथा विदेशों से, हज़ारों भाई-बहनें आते थे तो उनका कार्य-उत्तरदायित्व इतना बढ़ जाता था कि एक अच्छे युवक या युवती के लिए भी सम्भालना कठिन था परन्तु उन्होंने एक तो सारी व्यवस्था को दादी जी के साथ मिलकर ऐसा बना रखा था कि कार्य सुचारू रूप से, झंझट और झड़प के बिना चलता रहता था और दूसरे वे स्वयं कार्य-प्रवाह से परिचित एवं सूचित रहती थीं तथा ध्यान देती थीं।

प्रातः ही वे सारे मधुबन का एक बार भ्रमण कर लेती थीं और भण्डारे आदि में, जहाँ-कहीं भी उनके परामर्श की आवश्यकता होती, वे राय दे आती थीं। उनकी कार्य लेने की विधि भी ऐसी थी कि सभी उनसे सन्तुष्ट रहते थे। वे उनकी कठिनाईयों को भाँप कर उन्हें वान्छित हल देती थीं और उनमें कठिनाईयों को पार करने के लिए प्रेरणा भरती थीं। यही कारण है कि मधुबन में जो भी वरिष्ठ सरकारी अधिकारी आते या बड़े उद्योगों के व्यवस्थापक आते, वे दीदी जी तथा दादी जी दोनों से मिलते समय यह अवश्य कहते कि यहाँ की व्यवस्था देखकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। न कोई कोलाहल, न आहट, न तनाव, न कार्य का ठहराव। शान्ति, परस्पर प्रेम तथा सेवाभाव से सुचारू कार्य देखकर सभी कहते थे कि प्रशासन सीखना हो तो इनसे सीखना चाहिए। फरवरी,1983 में मधुबन में बड़ा सम्मेलन हुआ, तब दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी के संरक्षण में तीन हज़ार व्यक्तियों के ठहरने, भोजन करने तथा सब प्रकार की सहूलियतें मिलने का और साथ-साथ सम्मेलन तथा योगादि का कार्य ऐसा शान्तिपूर्ण चला कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लोगों ने भी इसकी प्रशंसा की। इसी प्रकार, इतने बड़े ओम् शान्ति भवन के इतने अल्पकाल में निर्माण होने की बात भी सभी के लिए एक मधुर आश्चर्य बन गया। वास्तव में, यह दोनों के मधुर व्यक्तित्व एवं प्रशासन-कुशलता का प्रभाव ही था कि सभी ने तन-मन-धन से सहयोग देकर इतने बड़े कार्य को सहज ही सफलता से पूरा कर लिया और वह भी योगयुक्त अवस्था एवं शान्ति से।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दो महिला एक साथ, एक ही कार्य के लिए निमित्त हों और उनमें मन-मुटाव या कलह-कलेश ना हो, क्या ये हो सकता है! हाँ, हम ऐसी दो महान महिलाओं के बारे में, जो एक ही प्रशासनिक कार्य पर नियुक्त होने पर भी प्रैक्टिकली वे एक आदर्श के रूप में दुनिया के सामने उदाहरण रूप बनीं। जो थीं तो दोनों अलग-अलग परन्तु जिन्होंने उन्हें नज़दीक से देखा वे कहते हैं कि शरीर भले दोनों के अलग-अलग थे परन्तु आत्मा एक थी। उनकी कार्यप्रणाली ही प्रमाण है जो उनके नेतृत्व में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने दिन दुगनी, रात चौगुनी तरक्की की वो भी बिना किसी ईर्ष्या या मन-मुटाव के।

त्यागमय जीवन

दीदी जी यद्यपि एक बहुत ही धनवान घराने में पैदा हुई थीं तथापि यज्ञ में उनकी वेष-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन अन्य सभी की तरह अत्यन्त सादा और साधारण था। उन्होंने कभी भी अपने लौकिक कुल के धन-धान्य के बारे में गर्व नहीं किया। उन्होंने अपने लौकिक जीवन के सुखों को कभी भी याद नहीं किया। इस प्रकार, वे सादगी और त्याग की मूर्ति थीं। उनके पास जो चीज़ें होतीं, वे दूसरों को ही सौग़ात देकर प्रभु-प्रेम में बाँधतीं। उन वस्तुओं को अपने लिए प्रयोग नहीं करती थीं।

नम्रचित्त

दीदी मनमोहिनी जी, दादी प्रकाशमणि जी के साथ मिलकर एक बहुत बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का कार्य-संचालन करती थीं। अतः उत्तरदायित्व के साथ उन्हें काफ़ी अधिकार भी प्राप्त थे। परन्तु उन्होंने कभी भी किसी से अधिकार या सत्ता के मद (अहंकार) में नहीं बोला। बल्कि यदि कभी किसी ने मार्यादानुसार व्यवहार नहीं किया, तब भी उन्होंने उसे मातृवत् प्रेम ही दिया ताकि वह ईश्वरीय ज्ञान के मार्ग से पीछे न हट जाए। यदि कभी कोई किसी कारण से रुष्ट भी हो गया तो भी उन्होंने स्वयं झुककर उसे स्नेह और सौहार्द्र से सींचा ताकि शिव बाबा के साथ उस आत्मा का बुद्धियोग बना रहे और वह देहधारी आत्माओं से रूठकर योगमार्ग से विचलित न हो जाये। उन्होंने कभी यह हठ नहीं किया कि "ग़लती अमुक व्यक्ति की ही है, अथवा दोष उसी का ही है और इसलिए मैं उससे क्यों बात करूँ?" बल्कि स्वयं दीदी जी ने ही उसके मन को शीतल करने के लिए कहा कि "भाई, मन में कोई बात हो तो निकाल दो, हम सभी एक मार्ग के राही हैं। दैवी परिवार में आत्मिक सम्बन्धी हैं और हमारे मन में आपके लिए शुभ भाव ही है।" इस प्रसंग में यह कहना उचित होगा कि दीदी जी को बच्चों का यह गीत – "हम हैं आत्मा, तुम हो आत्मा, आपस में भाई-भाई, बाबा कहते पढ़ो पढ़ाई, नहीं किसी से लड़ो लड़ाई", अच्छा लगता था।

कौन करता...

- पेज 4 का शेष

किया गया था तब वो बहुत शुद्ध अवस्था में था। और इसीलिए न्याय करता है अपने कर्मों के साथ। इसीलिए फिर उनसे पूछा गया कि ये सब बातें तुमको कब तक याद रहती हैं? कहा 2 साल तक तो मुझे अच्छे से सारा याद रहता है कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, किसलिए मैं यहाँ आया हूँ! लेकिन जैसे ही मेरी वाचा खुलती है, वाचा खुलने के बाद फिर धीरे-धीरे विस्मृत हो जाता हूँ। और फिर विस्मृत होकर मुझे पता नहीं चलता है कि क्या मैंने फाइनलाइज़ किया था। और इसीलिए जब हमारे सामने वो डेस्टिनी आती है तो हम दुःखी भी हो जाते हैं, परेशान भी हो जाते हैं। हम कभी-कभी भगवान को भी दोषी मान लेते हैं। क्योंकि हम भूल जाते हैं कि मैंने ही ये फाइनलाइज़ किया था। ये रिसर्च, विज्ञान के द्वारा स्पष्ट हुई है।

जमैका-अमेरिका। ब्रह्माकुमारीज़ के ब्र.कु. भारती दीदी ने मोंटेगो बे के मेन स्ट्रीट रोज हॉल में ज्ञान चर्चा के लिए गवर्नमेंट ऑफिशियल,एंड्रयू विंटर,सी.ई.ओ. ऑफ पी.आई.सी.ए., लीरोय विलियम्स,मेयर ऑफ मोंटेगो बे,पैरिश काउंसिल,सेंट जेम्स, रिचर्ड वेर्नोन, डेप्युटी मेयर ऑफ मोंटेगो बे,पैरिश काउंसिल,सेंट जेम्स, लेनोक्स वालेस,सी.ई.ओ. ऑफ वेस्टर्न हेल्थ अथॉरिटी, विंस्टन डियर,चेयरमैन ऑफ अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, बिशप कॉनराड पिटकिन,कस्टोस ऑफ सेंट जेम्स, होमर एडवर्ड डेविस,मिनिस्टर ऑफ स्टेट इन लॉकल गवर्नमेंट एंड रूरल डेवलपमेंट, कैरोन बेंजामिन,जनरल मैनेजर ऑफ कन्वेंशन सेंटर,मोंटेगो बे के साथ-साथ डॉक्टर्स और बिज़नेसमैन को भी आमंत्रित किया।

मियामी-फ्लोरिडा(यू.एस.ए.)। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ब्र.कु. तेज द्वारा फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के लिए ऑनलाइन सेशन का आयोजन किया गया। जिसमें यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट से डॉ. प्रियंका अल्लूरी को 'हाईवे ज्योमेट्री डिज़ाइन' क्लास के लिए आमंत्रित किया। ब्र.कु. तेज ने मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के तरीकों को साझा किया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे हमारी चेतना हमारे चारों ओर की दुनिया का निर्माण करती है और मन की अच्छी स्थिति बनाए रखने के लिए 'ट्रैफिक कंट्रोल ऑफ द माइंड' स्पिरिचुअल टूल का क्या महत्व है।

आसिका-तपस्याधाम(ओडिशा)। लॉकडाउन के समय ज़रूरतमंदों को स्थानीय प्रशासन के माध्यम से भोजन व जल प्रदान करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लिली तथा अन्य।